



# एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 05 (मई, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

## बकरी पालन : ग्रामीण आजीविका एवं स्वरोजगार का सशक्त माध्यम

राधे श्याम मीना<sup>1</sup>, अंकित कुमार परमार<sup>2</sup> एवं राहुल मीना<sup>1</sup>

<sup>1</sup>डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

<sup>2</sup>भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [rahulmeena26696@gmail.com](mailto:rahulmeena26696@gmail.com)

किसान खेती के साथ पशुपालन का कार्य प्राचीन काल से करते आ रहे हैं। पशुओं की उपयोगिता कृषि से जुड़े अनेक कार्यों में महत्वपूर्ण रही है। पशुओं से प्राप्त गोबर की जैविक खाद कृषि उत्पादन को बढ़ावा देती है तथा दूध और मांस किसानों की आय का प्रमुख स्रोत हैं। वर्तमान समय में कृषि से अपेक्षित लाभ न मिलने के कारण अनेक किसान पशुपालन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में बकरी पालन एक अच्छा विकल्प बनकर उभरा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बकरी को “गरीब की गाय” कहा जाता है क्योंकि यह आजीविका का सुरक्षित साधन मानी जाती है। बकरी आकार में छोटी होने के कारण इसके रख-रखाव में कम लागत आती है तथा सूखे जैसी परिस्थितियों में भी इसके भोजन की व्यवस्था अपेक्षाकृत सरल रहती है। इसकी देखभाल महिलाएँ एवं बच्चे भी आसानी से कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर आर्थिक जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। बकरी पालन कृषि प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। घरेलू बकरी एक छोटी जुगाली करने वाली प्रजाति है, जिसे विस्तृत, अर्द्ध-गहन तथा गहन प्रणालियों में पाला जा सकता है। कम निवेश के साथ भी बकरी पालन से पर्याप्त लाभ प्राप्त किया जा सकता है। बकरी पालन लगभग सभी जलवायु क्षेत्रों में सामान्य आवास, कम लागत तथा साधारण देखभाल के साथ संभव है। इसके उत्पादों की बिक्री के लिए बाजार भी आसानी से उपलब्ध हो जाता है।

### बकरी पालन का महत्व

बकरी पालन गरीब किसानों, भूमिहीन मजदूरों तथा छोटे पशुपालकों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। कम लागत में अधिक लाभ देने के कारण यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायक है। वर्तमान समय में चारा, दाना तथा दवाइयों की बढ़ती कीमतों के कारण बड़े पशुओं का पालन महंगा होता जा रहा है, जबकि बकरी पालन कम खर्च में भी किया जा सकता है। बकरी पालन से दूध, मांस, खाद तथा अन्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। बकरी का दूध पौष्टिक माना जाता है तथा अनेक लोग इसे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानते हैं। इसके अतिरिक्त बकरी का मांस बाजार में अच्छी मांग रखता है, जिससे पशुपालकों को अच्छा आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

### आवास प्रबंधन

बकरी पालन में वैज्ञानिक आवास प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि उचित आवास पशुओं को प्रतिकूल जलवायु, वर्षा, अत्यधिक तापमान तथा रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। बकरियों के लिए बनाया जाने वाला आवास स्वच्छ, सूखा, हवादार तथा पर्याप्त प्रकाशयुक्त होना चाहिए। आवास का स्थान ऊँचा होना चाहिए ताकि वर्षा का पानी जमा न हो और नमी की समस्या उत्पन्न न हो। नमी वाले स्थानों पर जीवाणु एवं परजीवी अधिक विकसित होते हैं, जिससे पशुओं में रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है। बकरी शेड का फर्श मजबूत एवं साफ रखने योग्य होना चाहिए। सामान्यतः मिट्टी, ईंट अथवा सीमेंट के फर्श का उपयोग किया जाता है, परंतु जहाँ अधिक वर्षा होती है वहाँ लकड़ी अथवा बाँस से बने ऊँचे फर्श लाभकारी माने जाते हैं। ऊँचे फर्श वाले शेड में मल-मूत्र नीचे गिर जाता है, जिससे स्वच्छता बनाए रखने में सुविधा होती है तथा रोगों का खतरा कम होता है। शेड में पर्याप्त वेंटिलेशन होना आवश्यक है ताकि ताजी हवा का आवागमन बना रहे और हानिकारक गैसों बाहर निकल सकें। अत्यधिक भीड़भाड़ से बचना चाहिए क्योंकि इससे तनाव बढ़ता है तथा रोगों का संक्रमण तेजी से फैल सकता है। गर्भित बकरियों, बच्चों तथा बीमार पशुओं के लिए अलग-अलग खंड बनाना उचित रहता है। बच्चों के लिए सूखा एवं गर्म स्थान आवश्यक होता है ताकि उनमें निमोनिया एवं अन्य संक्रमणजनित रोगों की संभावना कम हो सके। बकरी आवास में साफ पेयजल की व्यवस्था, चारा रखने के लिए नांद तथा

मल-मूत्र निकासी की उचित प्रणाली होनी चाहिए। नियमित सफाई एवं कीटाणुनाशक दवाओं के प्रयोग से शेड को रोगमुक्त रखा जा सकता है।

### आहार एवं पोषण प्रबंधन

बकरी पालन में संतुलित एवं वैज्ञानिक आहार प्रबंधन का अत्यधिक महत्व है क्योंकि उचित पोषण पशुओं की वृद्धि, प्रजनन क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा उत्पादन को सीधे प्रभावित करता है। बकरियाँ स्वभाव से ब्राउजर होती हैं तथा पेड़ों की पत्तियाँ, झाड़ियाँ, हरी घास, सूखा चारा तथा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। संतुलित आहार में ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण, विटामिन तथा पर्याप्त मात्रा में पानी का समावेश होना चाहिए। हरे चारे के साथ सूखे चारे का संतुलित उपयोग पाचन क्रिया को सामान्य बनाए रखने में सहायक होता है। हरे चारे में प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं जबकि सूखा चारा रूमेन की क्रियाशीलता बनाए रखने में सहायक होता है। दुग्ध उत्पादन करने वाली बकरियों को अतिरिक्त संकेन्द्रित आहार की आवश्यकता होती है क्योंकि दूध उत्पादन के दौरान शरीर से अधिक पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था के अंतिम चरण में गर्भित बकरियों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार देना आवश्यक है ताकि गर्भस्थ बच्चों का विकास सही प्रकार से हो सके। यदि इस अवधि में पर्याप्त पोषण न मिले तो बच्चों का जन्म कमजोर हो सकता है तथा दुग्ध उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। बकरी के बच्चों को जन्म के तुरंत बाद खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि खीस में रोग प्रतिरोधक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। प्रारंभिक अवस्था में बच्चों को उचित पोषण मिलने से उनकी वृद्धि दर अच्छी रहती है तथा मृत्यु दर कम होती है। खनिज मिश्रण एवं नमक का नियमित उपयोग भी आवश्यक है क्योंकि इनके अभाव में वृद्धि, प्रजनन एवं उत्पादन क्षमता प्रभावित हो सकती है। स्वच्छ एवं ताजा पानी की निरंतर उपलब्धता आवश्यक होती है क्योंकि पानी शरीर की विभिन्न जैविक क्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण होता है।

### स्वास्थ्य प्रबंधन

बकरी पालन में स्वास्थ्य प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य पशुओं को रोगमुक्त रखना तथा उत्पादन क्षमता बनाए रखना है। अस्वस्थ पशुओं में वृद्धि दर, प्रजनन क्षमता तथा उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे आर्थिक हानि होती है। इसलिए नियमित स्वास्थ्य देखभाल एवं रोग नियंत्रण उपाय अत्यंत आवश्यक हैं। बकरियों में संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए समय-समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए। टीकाकरण पशुओं में रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करता है तथा रोग फैलने की संभावना को कम करता है। इसके साथ ही नियमित कृमिनाशन भी आवश्यक है क्योंकि आंतरिक परजीवी पशुओं की वृद्धि एवं स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। कृमि संक्रमण के कारण पशुओं में कमजोरी, वजन में कमी तथा उत्पादन क्षमता में गिरावट देखी जाती है। बाह्य परजीवी जैसे जूँ, किलनी एवं माइट्स भी बकरियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इनके नियंत्रण के लिए नियमित सफाई तथा उचित दवाओं का उपयोग आवश्यक है। पशुओं के शरीर, त्वचा एवं बालों की नियमित जांच करनी चाहिए ताकि संक्रमण का पता प्रारंभिक अवस्था में ही लगाया जा सके। बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग रखना चाहिए ताकि संक्रमण अन्य पशुओं में न फैले। रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। समय पर उपचार न मिलने पर रोग गंभीर रूप ले सकता है। स्वच्छ पानी, संतुलित आहार, साफ आवास एवं उचित प्रबंधन रोग नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नियमित सफाई एवं कीटाणुनाशन से रोगजनक सूक्ष्मजीवों की संख्या कम की जा सकती है।

### प्रजनन प्रबंधन

सफल बकरी पालन के लिए वैज्ञानिक प्रजनन प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। प्रजनन के लिए स्वस्थ, रोगमुक्त तथा अच्छी उत्पादन क्षमता वाले नर एवं मादा पशुओं का चयन करना चाहिए। अच्छी नस्ल के पशुओं के उपयोग से संतति की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा उत्पादन क्षमता बढ़ती है। प्रजनन योग्य बकरियों का उचित आयु एवं शारीरिक स्थिति में प्रजनन कराना आवश्यक होता है। अत्यधिक कमजोर अथवा बीमार पशुओं का प्रजनन नहीं कराना चाहिए क्योंकि इससे कमजोर संतति उत्पन्न होने की संभावना रहती है। गर्भित बकरियों की विशेष देखभाल करनी चाहिए तथा उन्हें संतुलित एवं पौष्टिक आहार उपलब्ध कराना चाहिए। प्रसव के समय स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। नवजात बच्चों की तुरंत सफाई कर उन्हें गर्म एवं सूखे स्थान पर रखना आवश्यक होता है। जन्म के तुरंत बाद खीस पिलाना बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चों की वृद्धि एवं विकास के लिए उचित पोषण, स्वच्छ आवास तथा नियमित स्वास्थ्य देखभाल आवश्यक होती है। कमजोर एवं बीमार बच्चों की विशेष निगरानी करनी चाहिए ताकि उनकी मृत्यु दर को कम किया जा सके।

### आर्थिक महत्व

बकरी पालन ग्रामीण परिवारों के लिए अतिरिक्त आय का अच्छा स्रोत है। कम लागत में प्रारम्भ होने वाला यह व्यवसाय छोटे किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के लिए स्वरोजगार का अवसर प्रदान करता है। बकरी पालन से प्राप्त आय का उपयोग परिवार की दैनिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा तथा अन्य घरेलू खर्चों के लिए किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बकरी पालन

महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। महिलाएँ घर के कार्यों के साथ-साथ बकरियों की देखभाल आसानी से कर सकती हैं, जिससे परिवार की आय में वृद्धि होती है।

### निष्कर्ष

बकरी पालन कम लागत, सरल प्रबंधन तथा बेहतर बाजार उपलब्धता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यंत उपयोगी व्यवसाय है। यह गरीब एवं छोटे किसानों के लिए आय का स्थायी स्रोत प्रदान करता है। उचित आवास, संतुलित आहार, नियमित स्वास्थ्य देखभाल तथा वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर बकरी पालन को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। वर्तमान समय में बकरी पालन स्वरोजगार एवं ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है।